पाठ 11. पछतावा

पाठ का उद्देश्य

बच्चे स्वभावतः हर काम जल्दबाज़ी में करते हैं। उन्हें हर बात की जल्दी लगी रहती है। प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को यह समझाना है कि कोई भी काम जल्दबाज़ी में नहीं करना चाहिए। किसी भी काम को करने से पहले सोच-विचार कर लेना चाहिए।

पाठ का सारांश

एक गाँव में एक किसान का परिवार रहता था। उसके परिवार में उसकी पत्नी, बेटा तथा एक नेवला था। एक दिन किसान की पत्नी को पानी लेने बाहर जाना था। वह बेटे को ज़मीन पर चादर बिछाकर सोता हुआ छोड़कर चली गई। उसने सोचा कि नेवला उसके बेटे की रखवाली करता रहेगा। जब वह लौटी तो उसने नेवले को घर के बाहर बैठा देखा। नेवले के मुँह पर खून लगा हुआ था। उसे लगा कि नेवले ने उसके बेटे को मार डाला है। उसने गुस्से में घड़ा नेवले के ऊपर दे मारा। किसान की पत्नी ने जब अंदर जाकर देखा तो पाया कि उसका बेटा तो आराम से सो रहा है तथा उसके आस-पास मरे हुए साँप के टुकड़े पड़े हैं। वह समझ गई कि नेवले ने उसके बेटे की रक्षा की है। चोट खाकर नेवला मर चुका था। किसान की पत्नी अपना सिर पीटकर रह गई। इसीलिए कहा जाता है – बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय।

अध्यापन संकेत

पाठ वाचन से पूर्व बच्चों का रुझान पाठ की ओर दिलाने के लिए पाठ की पृष्ठभूमि से संबंधित चर्चा करें। उनसे पूछें –

- ❖ क्या तुम्हें भी हर काम की जल्दी लगी रहती है?
- ❖ समझाएँ, जल्दबाजी में किए काम का परिणाम अच्छा नहीं होता।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।